वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 278
ISBN 978-93-80353-75-3

आओ जानें !
तेरहद्वीप रचना में क्या-क्या है?

-: लेखिका :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweeep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

तृतीय संस्करण	वीर नि. सं. 2538	मूल्य
2200 प्रतियाँ	माघ कृ. 14, 22 जनवरी 2012	10/-रुपये

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण (सन् 2007)-2200 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण (सन् 2011)-2200 प्रतियाँ प्रकाशित

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की स्थापना सन् 1972 में की गई। सर्वप्रथम इस ग्रंथमाला से अष्टसहस्री ग्रंथ का प्रकाशन हुआ। पश्चात् लगातार इस ग्रंथमाला के प्रकाशनों में वृद्धि होती गई। हमें अत्यन्त प्रसन्नता है कि वर्तमान में इस ग्रंथमाला से सैकड़ों ग्रंथों का प्रकाशन होकर प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में साहित्य समाज में पहुँच रहा है।

ग्रंथमाला की स्थापना करना बहुत सरल बात हो सकती है लेकिन विषय वस्तु के सही रहस्य को जानने वाले प्रामाणिक लेखक मिलना अथवा उनकी आगमसम्मत और ज्ञानवर्द्धक लेखनी से उद्भुत साहित्य मिलना इतना सरल नहीं है। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि वर्तमान समय में धर्म, संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में प्राचीन आगम एवं पूर्वाचार्यों के अनुकूल प्रामाणिक कथनी करने वाले लेखकगण भी दुर्लभता से ही मिल पाते हैं।

हमें महान गौरव है कि इस ग्रंथमाला की संस्थापिका जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी हैं, जिनकी अद्भुत एवं प्रामाणिक लेखन शक्ति के कारण ही इस ग्रंथमाला से अनेकों साहित्य का प्रकाशन हुआ है और हो रहा है।

ऐसी महान विदुषी एवं आगम के अनुकूल अपनी चर्या और लेखनी को चलाने वाली पूज्य माताजी की प्रेरणा से जंबूद्वीप-हस्तिनापुर में तेरहद्वीपों की आकर्षक स्वर्णमयी रचना का निर्माण कराया गया है। इस तेरहद्वीप रचना के दर्शन करने हेतु देश-विदेश से प्रतिदिन सैकड़ों भक्तजन जंबूद्वीप-हस्तिनापुर पधार रहे हैं। इस रचना के महत्व को समझाने हेतु पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने यह पुस्तिका लिखी है। इस पुस्तिका में प्रतिपादित तेरहद्वीप रचना के विषय में जानकर निश्चित ही आप जैन भूगोल के समग्र स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करेंगे, ऐसी आशा है।

प्रस्तावना

-जीवन प्रकाश जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

वास्तव में देखा जाये तो तेरहद्वीप रचना जैन भूगोल का समग्र स्वरूप ही है। जैन धर्म में किस प्रकार से सृष्टि की रचना का वर्णन किया गया है यह बात हम जंबूद्वीप-हस्तिनापुर में नवनिर्मित तेरहद्वीप जिनालय के दर्शन से जान सकते हैं।

वैसे तो मध्यलोक में असंख्यात द्वीप व समुद्र हैं, ऐसा वर्णन जैन शास्त्रों में है। इन द्वीप-समुद्रों में प्रथम द्वीप जंबूद्वीप तथा प्रथम समुद्र लवण समुद्र से लेकर अंतिम स्वयंभूरमण द्वीप व स्वयंभूरमण समुद्र तक असंख्यात द्वीप हैं। चूँकि इन असंख्यात द्वीप समुद्रों में मात्र तेरहद्वीपों तक ही जिनभगवन्तों के मंदिरों का अस्तित्व है इसीलिए तेरहद्वीपों की वंदना, पूजा, अर्चना करने का महत्व सर्वाधिक है। तेरहद्वीपों में भी मात्र प्रारंभिक ढाई द्वीपों तक ही मनुष्यगण जा सकते हैं। उसके पश्चात् नंदीश्वर आदि अन्य द्वीपों में मात्र देवगण ही जा सकते हैं। यही कारण है कि अष्टान्हिका आदि पर्वों में हम अपने पृथिवीतल पर ही बैठकर नंदीश्वर द्वीप की पूजा-आराधना करते हैं तथा उपवास आदि करके अपने कर्ममलों को नष्ट करते हैं। अष्टान्हिका पर्व में देवगण नंदीश्वर द्वीप में जाकर सतत आठ दिनों तक भगवान की खूब पूजा-अर्चना करते हैं।

तेरहद्वीप रचना में प्रथम ढाई द्वीप में कुल 398 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं पश्चात् चौथे, पाँचवे, छठे व सातवें द्वीप में कोई भी जिनमंदिर नहीं हैं। पुनः आठवें नंदीश्वर द्वीप में 52 जिनमंदिर हैं। पश्चात् नवमें व दशवें द्वीप में कोई जिनमंदिर नहीं है। पुनः ग्यारहवें

द्वीप में 4 जिनमंदिर तथा बारहवें द्वीप में कोई जिनमंदिर नहीं है। पुनः तेरहवें रुचकवर द्वीप में 4 जिनमंदिर हैं। इस प्रकार तेरहद्वीप के कुल 458 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं।

ऐसे तेरहद्वीपों के 458 अकृत्रिम स्वर्णमयी जिनमंदिरों से युक्त तेरहद्वीप रचना का निर्माण पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की अपूर्व ज्ञान गरिमा के आधार पर उन्हीं की प्रेरणानुसार जंबूद्वीप-हस्तिनापुर तीर्थ परिसर में कराया गया है। इस रचना में 458 अकृत्रिम जिनमंदिरों के अलावा लगभग 850 देवभवन एवं उनके चैत्यालय में विराजमान सिद्ध भगवन्तों की प्रतिमाएं, ढाईद्वीप की 170 कर्मभूमियों के 170 समवसरण, जो चतुर्मुखी जिनप्रतिमाओं से संयुक्त हैं तथा अस्सी जिनप्रतिमाओं से संयुक्त पंचमेरु पर्वत विराजमान किये गये हैं। इस प्रकार इस रचना में लगभग 2100 भगवन्तों की प्रतिमाएं विराजमान हैं, जिनके दर्शन-वंदन से भक्तजन सातिशय फल प्राप्त करते हुए अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। आप भी इस रचना के दर्शन कर असीम पुण्य का संचय करें और जैन भूगोल के विस्तार को जानने का सार्थक प्रयास करें। इस पुस्तिका में तेरहद्वीप रचना का संक्षिप्त किन्तु रोचक भाषा में वर्णन किया गया है जिसे पढ़कर सामान्य भक्त भी तेरहद्वीप रचना के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

स्वर्णिम तेरहद्वीप की रचना

–क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज

मध्यलोक के अंदर असंख्यात द्वीप-समुद्र हैं उनमें से प्रथम से लेकर तेरह द्वीपों में अनादि-निधन 458 अकृत्रिम जिन- चैत्यालय हैं। सन् 1965 में श्रवणबेलगोल में चातुर्मास के मध्य भगवान बाहुबली के चरणों में ध्यान करते हुए एक दिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने उन 458 चैत्यालयों के दिव्य दर्शन किये।

उसके पश्चात् पूज्य माताजी ने प्रवचनों में परोक्षरूप से उन चैत्य-चैत्यालयों के दर्शन कराना प्रारंभ कर दिया। उन चैत्यालयों की दिव्यता को सुनकर अनेकों नगर तथा शहर के श्रावकों ने इस दिव्य रचना को पृथ्वी पर साकार रूप में बनवाने का निवेदन किया। चर्चा चलती रही और माताजी दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ती रहीं। सन् 1966 का चातुर्मास सोलापुर में हुआ। सन् 1967 का चातुर्मास सनावद में हुआ। वहाँ भी माताजी ने तेरह द्वीपों की वंदना परोक्ष में कराई। तभी यह रचना निकटवर्ती सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में बनाने की चर्चा हुई। वहाँ हमने इसके लिए खुले मैदान में एक हजार फुट जमीन का नाप किया किन्तु किन्हीं कारणों से वहाँ यह रचना नहीं बन पाई और माताजी राजस्थान के विभिन्न नगरों में विहार करते हुए सन् 1972 में दिल्ली पधारीं।

पुनः सन् 1974 में हस्तिनापुर में तेरह द्वीपों में से प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप रचना का निर्माण प्रारंभ हुआ। पुनः 20 वर्ष पश्चात् तेरहद्वीप रचना बनाने का उपक्रम किया गया। किन्तु खुले मैदान की बजाय विशाल जिन मंदिर में बनाने का निर्णय लिया गया।

रचना के लिए गोल हाल बनाने के बाद भी कुछ वर्ष तक माताजी का विहार अन्यत्र होने से रचना का निर्माण रुका रहा। सन् 2005 में जब माताजी का ससंघ पुनः पदार्पण हुआ तब से पूज्य माताजी ने दिनरात एक करके अथक परिश्रम पूर्वक रचना की रूपरेखा बताई। मुझे गौरव है कि 40 वर्ष पूर्व मैंने पूज्य माताजी के समक्ष तेरहद्वीप रचना बनाने का संकल्प लेकर यह वचन दिया था कि आपके संयम में कोई बाधा नहीं आने पाएगी, आपको किसी से पैसे की याचना नहीं करनी पड़ेगी। हम लोग समाज का सहयोग लेकर रचना बनाएंगे और आपकी भावना को साकार करेंगे। उसी संकल्प शक्ति एवं दृढ़ता के आधार पर माताजी ने मात्र हम लोगों को करणानुयोग ग्रंथों के अनुसार जम्बूद्वीप और तेरहद्वीपों की रचना बताई है। उन्होंने न तो कभी किसी से पैसे के बारे में कहा और न ही किसी निर्माण आदि में रूचि ली है। अपने रत्नत्रय की साधना करते हुए नित्य नये साहित्य की रचना करके समाज को जो अमूल्य निधि प्रदान की है वह आपके अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग का प्रतीक है। मेरे साथ कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्रभाई जी एवं पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने रात-दिन एक करके माताजी की भावनाओं को साकार रूप देने का तो कार्य किया ही है, पूरे दिगम्बर जैन समाज के बच्चे-बच्चे ने भी इन अभूतपूर्व निर्माणों में सहयोग देकर तीर्थ एवं गुरुभक्ति का परिचय प्रदान किया है।

2200 वर्ष प्राचीन ग्रंथ तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ का गहन अध्ययन कर माताजी ने तेरह द्वीपों में उल्लिखित संपूर्ण रचना में प्रत्येक व्यवस्था को दर्शाया है। इस रचना को देखकर अब सरलता से तेरह द्वीपों के बारे में भली प्रकार से जानकारी प्राप्त हो सकेगी। मनुष्य सशरीर केवल ढाईद्वीप तक के अकृत्रिम चैत्यालयों के ही

दर्शन कर सकते हैं वे भी इस पंचमकाल में वहाँ तक नहीं जा सकते। अतः उनकी प्रतिकृति बनाकर उनके दर्शनों का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। पूरे भारत में प्रथम बार यह रचना भी अभूतपूर्व बनी है।

आप-हम सब सौभाग्यशाली हैं कि सबको तन-मन-धन से तथा कृत कारित अनुमोदना से इस भव्य रचना को बनाने का/ दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। मैं समझता हूँ कि जिस प्रकार पूज्य माताजी द्वारा सम्प्रेरित समस्त निर्माण एवं कार्यकलाप भव्यता के साथ सम्पन्न हुए हैं, उसी प्रकार अब मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पर्वत-खण्ड की अखण्ड शिला में निर्मित हो रही भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा शीघ्र ही बनकर प्रगट हो। सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज को अत्यन्त गौरव का अनुभव करते हुए अपने तन-मन-धन का सदुपयोग इस अद्वितीय मूर्ति निर्माण में करना है और संसार के समक्ष शाश्वत जैन धर्म का कीर्तिमान प्रस्तुत करना है।

आओ जानें !

तेरहद्वीप रचना में क्या-क्या है?

प्रस्तुति–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

धर्मप्रेमी बंधुओं! हस्तिनापुर की पावन वसुन्धरा पर नवनिर्मित तेरहद्वीप रचना के बारे में आपको जिज्ञासा होगी कि यह क्या है? कहाँ है? और इसे धरती पर साकार करने का लक्ष्य क्या है ?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर आपको क्रमशः प्राप्त करके तेरहद्वीप की अद्वितीय रचना के दर्शन कर अपूर्व पुण्य संचित करना है। अब सर्वप्रथम जानिये कि तेरहद्वीप रचना क्या है ?

यह जैन धर्म के करणानुयोग ग्रंथों (तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार आदि) में वर्णित जैनभूगोल की रचना है। तेरहद्वीप किसी एक द्वीप का नाम नहीं, वरन् प्रथम जम्बूद्वीप से लेकर तेरहवें रुचकवर द्वीप तक तेरहद्वीपों की व्यवस्था इस रचना में दर्शाई गई है। उन तेरहों द्वीपों को अलग-2 घेर कर एक-एक समुद्र भी रहते हैं अतः तेरह समुद्र भी जानना चाहिए।

उन तेरहों द्वीप और समुद्रों के नाम इस प्रकार हैं—

1.जम्बूद्वीप	–लवण समुद्र
2.धातकीखंड द्वीप	–कालोदधि समुद्र
3.पुष्करवर द्वीप	–पुष्करवर समुद्र
4.वारुणीवर द्वीप	–वारुणीवर समुद्र
5.क्षीरवर द्वीप	–क्षीरवर समुद्र
6.घृतवर द्वीप	–घृतवर समुद्र
7.क्षौद्रवर द्वीप	–क्षौद्रवर समुद्र

8.नंदीश्वर द्वीप	–नंदीश्वर समुद्र
9.अरुणवर द्वीप	–अरुणवर समुद्र
10.अरूणाभास द्वीप	–अरूणाभास समुद्र
11.कुण्डलवर द्वीप	–कुण्डलवर समुद्र
12.शंखवर द्वीप	–शंखवर समुद्र
13.रुचकवर द्वीप	–रुचकवर समुद्र

इन तेरहद्वीपों में विशेष ध्यान देने का विषय यह है कि ये सभी द्वीप एक दूसरे को घेरकर गोल और चपटे रूप में स्थित हैं। इनमें से जो तीसरा पुष्कर द्वीप है उसमें बीचों बीच में गोलाकार मानुषोत्तर पर्वत है इसलिए यहाँ तक का क्षेत्र ढाई द्वीप के नाम से जाना जाता है और मानुषोत्तर पर्वत के आगे मनुष्यों का आवागमन बन्द है अर्थात् ढाई द्वीपों तक मनुष्य उत्पन्न होते हैं, आगे नहीं। आगे के द्वीपों में मात्र देवता रहते हैं और देवता ही वहाँ आ-जा सकते हैं।

दूसरी बात इन ढाई द्वीपों के अन्दर विशेष जानने की यह है कि धातकीखण्ड और पुष्करार्ध इन दोनों द्वीपों में उत्तर-दक्षिण की ओर दो-दो इष्वाकार पर्वत हैं जिनसे धातकीखण्ड के दो भेद हो जाते हैं पूर्व धातकीखण्ड-पश्चिम धातकीखण्ड। पुष्करार्धद्वीप के भी दो भेद होते हैं–पूर्व पुष्करार्ध–पश्चिम पुष्करार्ध। इस प्रकार जम्बूद्वीप, पूर्व धातकीखण्डद्वीप, पश्चिम धातकीखण्डद्वीप, पूर्व पुष्करार्धद्वीप और पश्चिम पुष्करार्धद्वीप इन पाँच स्थानों की रचना एक समान है। अर्थात् इन पाँचों द्वीपों में एक-एक मेरु पर्वत हैं। जो कि ढाई द्वीप के पंचमेरु पर्वत कहलाते हैं।

इस तेरहद्वीप रचना का प्रवेश द्वार उत्तर मुखी है, इसके अन्दर प्रवेश करते ही शीशे के बहुत बड़े दरवाजे से पूरी स्वर्णिम रचना के दर्शन होते हैं और हृदय एकदम गद्गद् हो जाता है।

4000 वर्गफुट की गोलाई में इस रचना की स्वर्णमयी छवि देखते ही बनती है। एक बार बड़े दरवाजे के पास से दर्शन करके किसी भी श्रद्धालु का मन तो भरता नहीं है अतः तत्काल वे दरवाजा खोलकर अंदर जाना चाहते हैं, किन्तु इस रचना के अन्दर जा कर दर्शन करने की व्यवस्था नहीं है इसलिए आप लोगों को उसी व्यवस्थानुसार चलना है। अर्थात् यहाँ भक्तिभावपूर्वक दर्शन करके बाहर के प्रदक्षिणा पथ से पूर्व दिशा की ओर पहुँचें, इस ओर बने प्लेटफार्म पर चढ़कर कांच के अन्दर के दृश्य देखें, ऐसा लगता है कि साक्षात् स्वर्ग धरती पर उतर आया है। सोने और पंचवर्णी रत्नों के काम वाले बड़े-बड़े पाँचों मेरु पर्वत 16-16 जिनालयों से युक्त हैं उनके ऊपर की चूलिका नीलवर्ण की है। इन पाँचों मेरु पर्वतों की पांडुक शिलाओं पर 29 अप्रैल 2007 को पंचकल्याणक के मध्य एक साथ ढाई द्वीप के 5 भरत क्षेत्रों के पाँच तीर्थंकरों का जन्माभिषेक हुआ, जिसे पूरे देश ने टी.वी.में आस्था चैनल पर देखकर धन्यता का अनुभव किया।

पूर्व दिशा से देखने पर बहुत सारे सोने के मंदिर, रंगीन-रंगीन देवभवनों में भगवान और 80 समवसरणों के दर्शन होते हैं। ये हैं–रुचकवर, कुण्डलवर पर्वतों के पूर्व दिशा सम्बन्धी 1-1 मंदिर, नंदीश्वर द्वीप के 13 मंदिर, मानुषोत्तर पर्वत का एक अकृत्रिम जिनमंदिर एवं पूर्व पुष्करार्ध द्वीप, पूर्व धातकीखण्ड द्वीप और जम्बूद्वीप की पूर्व दिशा के विदेह क्षेत्रों के जिनमंदिर और देवभवन। यहाँ तेरहों द्वीप के 458 अकृत्रिम मंदिर हैं, वे सोने के कलात्मक काम वाले मंदिर के रूप में विराजमान किये गये हैं तथा रंग-बिरंगे देवभवनों में गृह चैत्यालय हैं, जिनमें किन्हीं के एक ओर साइड में और किन्हीं में नीचे देव या देवी अपने-अपने भवन में बैठे हैं ओर दूसरी ओर या ऊपर गृह चैत्यालय के रूप में भगवान विराजमान

हैं। विदेह क्षेत्रों में जगह कम होने पर भी वहाँ छोटे-छोटे समवसरणों में भी 4-4 भगवान दिख रहे हैं। जैसा कि जैन ग्रंथों में कहा भी है कि धनिया के पत्ते बराबर मंदिर बनाकर सरसों बराबर प्रतिमा विराजमान करने वाले भव्यों को असीम पुण्य का संचय होता है। इस पूर्व दिशा की रचना में 1-2 नहीं, पूरे 80 समवसरण हैं जो कि बड़े सुन्दर लगते हैं। इन्हें पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की भावनानुसार कुशल कारीगर ने अष्टधातु से बनाया है।

महानुभावों ! यूँ तो यह पूरी रचना अष्टधातु की ही बनी हुई है, आप पूरी सोने की मत समझ लेना, किन्तु भक्तों की उदात्त भावनानुसार इसमें पंचमेरु पर्वत, 458 अकृत्रिम चैत्यालय एवं 170 समवसरणों में सोने का भी काम कराया गया है, शेष सभी जगह यथास्थान विभिन्न रंगीन कलाकृति, बाग-बगीचे, नदी-पर्वत आदि दर्शाए गये हैं। जिस पर्वत का जो वर्ण ग्रंथों में कहा है उसे उसी रंग में दिखाने की प्रेरणा पूज्य माताजी की रही है। पूर्व दिशा के सभी भगवन्तों को श्रद्धा पूर्वक नमन करते हुए आगे चलें,तो दक्षिण के प्रदक्षिणा पथ में निर्मित प्लेटफार्म पर चढ़ें इधर से पूरी रचना का दक्षिण भाग देखना है। इधर ढाई द्वीपों के पाँच भरतक्षेत्रों की रचना है। अतः 5 तीर्थंकर भगवन्तों के सुन्दर समवसरण में चतुर्मुखी प्रतिमाओं के दर्शन करके मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति कीजिए। प्रायः सभी जगह द्वीपों के, पर्वतों के नाम भी लिखे हैं ऊँचे प्लेटफार्म से पूरी रचना कुछ ज्यादा ही सुन्दर लगती है। इसे जो लोग ठीक से नहीं समझ पाते हैं वे भी रचना का सौंदर्य देखकर अनायास बोल पड़ते हैं–

"अरे वाह! ज्ञानमती माताजी ने तो धरती पर स्वर्ग ही बनाकर दिखा दिया है।" अर्थात् इस प्रकार कहकर और मन में प्रसन्न

होकर अन्जान पर्यटक भी अज्ञानरूप से पुण्य का बंध कर लेते हैं। जैसे जबर्दस्ती भी औषधि खाने वाला प्राणी स्वस्थ हो जाता है, अरुचि से मिश्री खाने वाले का भी मुँह मीठा ही होता है, उसी प्रकार अन्जान लोगों के द्वारा भी धर्म, तीर्थ और धर्मायतनों की वंदना करने से उत्तम-हितकर फल की प्राप्ति भी कर ली जाती है इसमें कोई सन्देह नहीं है।

बन्धुवर! आपके पीछे भी कुछ लोग जरूर प्रदक्षिणा करते हुए आ रहे हैं अतः आपको प्लेटफार्म से उतर कर अब आगे चलना है। मन में आल्हाद है और वचन से कोई न कोई स्तुति पढ़ते हुए पश्चिम दिशा के प्लेटफार्म पर चढ़ें। यहाँ से रचना का पश्चिम भाग पूरा देखना है। सबेरे-सबेरे चूँकि पूर्व दिशा का सूर्य सामने शीशे से प्रवेश करता है, इसलिए सुबह 7 बजे से 1 बजे तक पश्चिम के प्लेटफार्म पर खड़े होकर पूरी रचना का जो स्वर्णिम निखार दिखता है वह वास्तव में शब्दों में कहा नहीं जा सकता है।

ऐसे पुण्यमयी क्षणों में आप गद्‌गद् होकर ये पंक्तियाँ अवश्य गुनगुनाएं-

तर्ज-मेरे देश की धरती.........

हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप की रचना स्वर्णमयी है...
हस्तिनापुरी में........।।
जहाँ खुले गगन में जम्बूद्वीप की, रचना जनमनहारी है।
वहीं जिनमंदिर में तेरहद्वीप की, रचना लगती प्यारी है।।
चउशत अट्ठावन चैत्यालय.......
चउशत अट्ठावन चैत्यालय में जिनवर बिम्ब विराज रहे।
उस गोलाकार विशाल जिनालय में स्वर्णिम जिनधाम रहे..
हस्तिनापुरी में........।।1।।

इसी प्रकार 1 बजे बाद सूर्य चूँकि दक्षिण-पश्चिम की ओर

जाने लगता है अतः पूर्व दिशा के प्लेटफार्म पर देखने वालों की भीड़ जमा रहती है। मंदिरों के अतिरिक्त तेरहद्वीप रचना के अन्दर बहुत सारे हरे-हरे वृक्षों में कुछ वस्तुएं लटकती दिख रही हैं। इनके बारे में भी आपको जानना है-

ढाई द्वीपों में 30 भोगभूमियाँ मानी गई हैं उन सभी जगहों पर 10-10 प्रकार के कल्पवृक्ष हैं जिनसे मुँहमांगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं। इनमें देखो, किसी कल्पवृक्ष में माला-मुकुट लटक रहे हैं, किसी में वीणा-ढोलक हैं, किसी में घन्टे हैं, किसी में मकान हैं, और किसी में फल लटक रहे हैं। अब आप स्वयं सोचें कि जहाँ इतने सारे कल्पवृक्ष और समवसरण आदि हैं वहाँ कोई भी मन वाञ्छित फल प्राप्त कर लेवे तो कौन सी बड़ी बात है। अरे! इस तेरहद्वीप रचना में तो शुरू से ही बड़ा चमत्कार देखने-सुनने को मिल रहा है। इसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होने के बाद 9 मई 2007 को कोरबा-छत्तीसगढ़ से एक सज्जन ने आकर बताया कि मेरी दुकान पर जिस दिन तेरहद्वीप पंचकल्याणक महोत्सव का निमंत्रण कार्ड प्राप्त हुआ, उसी दिन इतनी अधिक आमदनी हुई, जितनी उससे पहले कभी नहीं हुई थी इसीलिए मैं उस रचना के साक्षात् दर्शन करने हस्तिनापुर आया हूँ। ऐसे ही रोज न जाने कितने लोग अपने-अपने चमत्कारिक अनुभव सुनाते रहते हैं, तब पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी कहती हैं कि-

"जहाँ 2100 जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं उस रचना के दर्शन करने वालों को हमेशा सब ओर से इक्कीसा फल ही प्राप्त होगा, इसमें कोई सन्देह वाली बात नहीं है।"

तीनों प्लेटफार्म से अन्दर की सब तरफ की रचना देख-देखकर निश्चितरूप से बड़ी खुशी होती है क्योंकि सभी दिशाओं में

विराजमान भगवन्तों के दर्शन होते हैं और छोटे-छोटे जम्बू-शाल्मलि आदि वृक्षों की शाखाओं पर भी बने जिनमंदिर दिखाई देते हैं। इनमें पाँच भरतक्षेत्रों एवं ऐरावतक्षेत्रों में वर्तमानकालीन 5-5 तीर्थंकर विराजमान हैं। विदेह क्षेत्रों के सीमंधर-युगमंधर आदि विद्यमान बीस तीर्थंकर भी यहाँ विराजमान किये गये हैं। ज्यादा सूक्ष्मता से इस रचना को जानने के लिए तो इसके परिचय की पुस्तक पढ़ें त्रिलोकभास्कर, तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार आदि ग्रंथों का स्वाध्याय आपको करना पड़ेगा। किन्तु यहाँ संक्षेप में इतना अवश्य जानना है कि–

1. इन तेरहद्वीपों के अंतर्गत ढाई द्वीप में पाँचमेरु पर्वत हैं।
2. प्रथम जम्बूद्वीप से लेकर तेहरवें रुचकवर द्वीप तक 458 अकृत्रिम-शाश्वत जिनमंदिर हैं।
3. इन स्वर्णिम पाँचों मेरुपर्वतों के 16-16 जिनमंदिरों में एवं सभी स्वर्णिम जिनमंदिरों में स्वयंसिद्ध भगवन्तों की जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं।
4. इन तेरहद्वीपों में हिमवान् आदि पर्वतों पर एवं पद्म आदि सरोवरों में श्री-ह्री-धृति आदि देवियों के कमल भवनों में कुल 830 देव-देवी के भवन हैं।
5. जम्बूद्वीप के अतिरिक्त सभी द्वीपों के पर्वतों पर सभी देव-देवियों के भवनों में उन-उनके गृहचैत्यालयों में भगवान की प्रतिमाएं विराजमान हैं।
6. इस रचना के अन्दर जम्बूद्वीप के 1 भरतक्षेत्र, 1 ऐरावतक्षेत्र है। पूर्व धातकीखण्ड और पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप में 1-1 भरतक्षेत्र और 1-1 ऐरावतक्षेत्र हैं। इसी प्रकार पूर्व पुष्करार्ध द्वीप एवं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप में 1-1 भरतक्षेत्र और 1-1 ऐरावतक्षेत्र हैं। ऐसे 5 भरतक्षेत्र एवं 5 ऐरावतक्षेत्र हैं।

7. इस पूरी रचना के अंदर ढाई द्वीपों में 160 विदेह क्षेत्र हैं। उनकी व्यवस्था इस प्रकार है–जम्बूद्वीप में 32 विदेहक्षेत्र, पूर्व धातकीखण्ड द्वीप में 32 विदेहक्षेत्र, पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप में 32 विदेहक्षेत्र, पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में 32 विदेहक्षेत्र एवं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप में 32 विदेहक्षेत्र अतः ३२×५=१६० की संख्या है।
8. इन सभी 160 विदेह क्षेत्रों में शाश्वत कर्मभूमि की व्यवस्था पाई जाती है। 5 भरतक्षेत्र एवं 5 ऐरावतक्षेत्रों की 10 कर्मभूमियाँ मिलाकर कुल 170 कर्मभूमियाँ ढाई द्वीपों में हैं।
9. इन सभी 170 कर्मभूमियों में 170 तीर्थंकर भगवन्तों के समवसरण तेरहद्वीप रचना में दर्शाए गए हैं जिनमें प्रत्येक में 4-4 जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं।
10. इसी प्रकार ढाई द्वीपों के 5 भरत, 5 ऐरावत क्षेत्रों के अन्य तीर्थंकर तथा विदेहों के विद्यमान 20 तीर्थंकर भगवान भी यहां विराजमान हैं तथा अनेक तीर्थंकर एवं सिद्ध भगवन्तों की प्रतिमाएं विराजमान हैं।
11. इन सब दो हजार से अधिक भगवन्तों के दर्शन करके महान पुण्य का संचय करें।
12. ढाई द्वीप की 30 भोगभूमियों में यथास्थान कल्पवृक्ष हैं जो मुँह मांगा फल देते हैं।
13. यहाँ पर सरस्वती, लक्ष्मी, पद्मावती एवं अनावृतयक्ष आदि की मूर्तियां भी हैं, वे भी सभी भक्तों को इच्छित फल देने वाले हैं।

तेरहद्वीपों में विराजमान ये सभी भगवान आप सबको मनवाञ्छित फल देने वाले हैं। सर्व अमंगल और विघ्न बाधाओं को दूर करने वाले हैं। आप इनके दर्शन करके अपने इच्छित फलों को प्राप्त करें।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज—मेरे देश की धरती.........

हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप की रचना स्वर्णमयी है....
हस्तिनापुरी में........।।
जहाँ खुले गगन में जम्बूद्वीप की, रचना जनमनहारी है।
वहीं जिनमंदिर में तेरहद्वीप की, रचना लगती प्यारी।।
चउशत अट्ठावन चैत्यालय.......
चउशत अट्ठावन चैत्यालय में जिनवर बिम्ब विराज रहे।
उस गोलाकार विशाल जिनालय में स्वर्णिम जिनधाम रहे......
हस्तिनापुरी में........।।1।।
जहाँ ध्यान का मंदिर और कमल मंदिर रचनाएं प्यारी हैं।
वहीं तेरहद्वीप जिनालय में पर्वत नदियां भी न्यारी है।।
इक सौ सत्तर हैं समवसरण...........
इक सौ सत्तर हैं समवसरण, प्रतिमाएं चतुर्मुखी राजें।
बीचों बिच देखो पंचमेरु पर्वतों की स्वर्ण छवी भासे.......
हस्तिनापुरी में........।।2।।
इस मानव निर्मित स्वर्ग का सुख, सब सुख से ज्यादा सुखकर है।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती की, तप किरणों से मनहर है।।
हरशीश जहाँ झुक जाता है.....
हरशीश जहाँ झुक जाता है, दर्शन से अन्तर ज्योति जगे।
"चन्दनामती" इस तीर्थ की महिमा हर तीरथ से अलग लगे।
हस्तिनापुरी में........।।3।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें...........

आवो हम सब करें वन्दना, तेरहद्वीप महान की।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिन भगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।। टेक.।।
तीनलोक में मध्यलोक है, द्वीप समुद्रों तक फैला।
द्वीप असंख्यों में तेरह-द्वीपों का वर्णन है करना।।
ढाई द्वीप में पाँच मेरु हैं, अस्सी चैत्यालय संयुत।
तीर्थंकर जन्माभिषेक से, पावन हैं वे पर्वत नित्य।।
उन पावन गिरिराजों को, वंदन करते मुनिराज भी।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिन भगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।।1।।
तेरहद्वीपों में चउशत, अट्ठावन चैत्यालय होते।
स्वयं सिद्ध जिनप्रतिमाओं से, जिनमंदिर शोभित होते।।
इन सब मंदिर की ही पूजन, इन्द्रध्वज में करते हैं।
जिनमंदिर पर ध्वजा चढ़ाकर, प्रभु गुण कीर्तन करते हैं।।
कार्यसिद्धि के लिए अर्चना, करो सिद्ध भगवान की।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिन भगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।।2।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने उसे बताया है।
हस्तिनापुर की धरती पर, उसको साकार कराया है।।
तेरहद्वीप जिनालय का, स्वर्णिम दिख रहा नजारा है।
धरती पर भूगोल जैन देखेगा, अब जग सारा है।।
करे 'चन्दनामती' वन्दना, अकृत्रिम जिनधाम की।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिनभगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।।3।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-श्याम तेरी बंशी..........

तेरहद्वीप रचना का देखो चमत्कार, हस्तिनापुरी में हुई जो साकार।
ज्ञानमती माताजी का है ये उपकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।
ग्रंथों में इसका वर्णन है आता।
धरा पर बना है तो कितना सुहाता।।
चार सौ अट्ठावन हैं प्रतिमा सुखकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।1।।

देखो ठीक से तो सारा समझ में है आता।
ढाई द्वीप तक है मात्र मनुष्यों का नाता।।
वहीं पाँच मेरू बने हैं सुखकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।2।।

सिद्ध मंदिरों के साथ देवभवन राजें।
समवसरण एक शतक सत्तर विराजें।।
ज्ञानमती मााताजी के ज्ञान का है सार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।3।।

सोने जैसे चमक रहे मंदिर ये सारे।
वंदना करेंगे इनकी सूर्य चांद तारे।।
'चंदनामती' का नमन होगा स्वीकार, छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।4।।

तेरहद्वीप रचना की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

आरति करो रे,
तेरहद्वीपों के जिनबिम्बों की आरति करो रे।। टेक.।।
तीन लोक में मध्यलोक के अंदर द्वीप असंख्य कहे।
उनमें से तेरहद्वीपों में अकृत्रिम जिनबिंब रहें।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चउ सौ अट्ठावन जिनमंदिर की आरति करो रे।।1।।
इनमें ढाई द्वीपों तक ही मनुज क्षेत्र कहलाता है।
पंच भरत पंचैरावत क्षेत्रों का दृश्य सुहाता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्रीपंचमेरु के जिनबिम्बों की आरति करो रे।।2।।
पंचम क्षीर समुद्र के जल से प्रभु का जन्म न्हवन होता।
अष्टम द्वीप नंदीश्वर में इन्द्रों द्वारा अर्चन होता।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
कुण्डलवर और रुचकवर द्वीप की आरति करो रे।।3।।
इन सबका वर्णन तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में मिलता है।
दर्शन कर साक्षात् पुण्य का कमल हृदय में खिलता है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
ढाई द्वीपों के समवसरण की आरति करो रे।।4।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने हमें बताया है।
हस्तिनापुर में यह रचना जिनमंदिर में बनवाया है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
"चन्दनामती" इस अद्भुत कृति की आरति करो रे।।5।।